१. नवनिर्माण

– त्रिलोचन

कवि परिचय : त्रिलोचन जी का जन्म २० अगस्त १९१७ को उत्तर प्रदेश के सुल्तानपुर जिले के कटघरा चिरानी पट्टी में हुआ । आपका वास्तविक नाम वासुदेव सिंह है । आप हिंदी के अतिरिक्त अरबी और फारसी भाषाओं के निष्णात ज्ञाता माने जाते हैं । पत्रकारिता के क्षेत्र में भी आप सक्रिय रहे । आपने काव्य क्षेत्र में प्रयोगधर्मिता का समर्थन किया और नवसृजन करने वालों के प्रेरणा स्रोत बने रहे । आपका साहित्य भारत के ग्राम समाज के उस वर्ग को संबोधित करता है; जो वर्षों से दबा-कुचला हुआ है । आपकी साहित्यिक भाषा लोकभाषा से अनुप्राणित है । सहज-सरल तथा मुहावरों से परिपूर्ण भाषा आपके साहित्य को लोकमानस तक पहुँचाकर जीवंतता भी प्रदान करती है । आपका निधन २००७ में हुआ ।

प्रमुख कृतियाँ : 'धरती', 'दिगंत', 'गुलाब और बुलबुल', 'उस जनपद का कवि हूँ', 'सबका अपना आकाश' (कविता संग्रह), 'देशकाल' (कहानी संग्रह), 'दैनंदिनी' (डायरी) आदि ।

विधा परिचय : 'चतुष्पदी' चार चरणोंवाला छंद होता है । यह चौपाई की तरह होता है । इसमें चार चरण होते हैं । इसके प्रथम, द्‌वितीय और चतुर्थ चरण में तुकबंदी होती है । भाव और विचार की दृष्टि से प्रत्येक चतुष्पदी अपने-आप में पूर्ण होती है ।

पाठ परिचय : प्रस्तुत चतुष्पदियों में कवि का आशावाद दृष्टिगोचर होता है । वर्तमान समय में सामान्य मनुष्य के लिए संघर्ष करना अनिवार्य हो गया है । कवि मनुष्य को संघर्ष करने और अँधेरा दूर करने की प्रेरणा देते हैं । जीवन में व्याप्त अन्याय, अत्याचार, विषमता और निर्बलता पर विजय पाने के लिए कवि बल और साहस एकत्रित करने का आवाहन करते हैं । न्याय के लिए बल का प्रयोग करना समाज के उत्थान के लिए श्रेयस्कर होता है; इस सत्य से भी कवि अवगत कराते हैं । कवि का मानना है कि समाज में समानता, स्वतंत्रता तथा मानवता को स्थापित करना हमारे जीवन का उद्‌देश्य होना चाहिए ।

तुमने विश्वास दिया है मुझको,
मन का उच्छ्‌वास दिया है मुझको ।
मैं इसे भूमि पर सँभालूँगा,
तुमने आकाश दिया है मुझको ।

सूत्र यह तोड़ नहीं सकते हैं,
तोड़कर जोड़ नहीं सकते हैं ।
व्योम में जाएँ, कहीं भी उड़ जाएँ,
भूमि को छोड़ नहीं सकते हैं ।

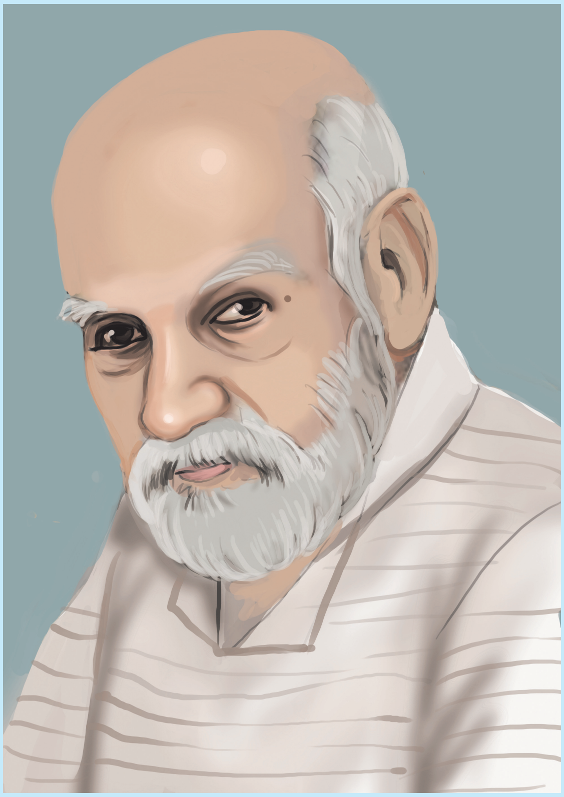

सत्य है, राह में अँधेरा है,
रोक देने के लिए घेरा है।
काम भी और तुम करोगे क्या,
बढ़े चलो, सामने अँधेरा है।

बल नहीं होता सताने के लिए,
वह है पीड़ित को बचाने के लिए।
बल मिला है तो बल बनो सबके,
उठ पड़ो न्याय दिलाने के लिए।

जिसको मंजिल का पता रहता है,
पथ के संकट को वही सहता है।
एक दिन सिद्धि के शिखर पर बैठ,
अपना इतिहास वही कहता है।

प्रीति की राह पर चले आओ,
नीति की राह पर चले आओ।
वह तुम्हारी ही नहीं, सबकी है,
गीति की राह पर चले आओ।

साथ निकलेंगे आज नर-नारी,
लेंगे काँटों का ताज नर-नारी।
दोनों संगी हैं और सहचर हैं,
अब रचेंगे समाज नर-नारी।

वर्तमान बोला, अतीत अच्छा था,
प्राण के पथ का मीत अच्छा था।
गीत मेरा भविष्य गाएगा,
यों अतीत का भी गीत अच्छा था।

– ('चुनी हुई कविताएँ' संग्रह से)

०

शब्दार्थ

व्योम = आकाश
सहचर = साथ-साथ चलने वाला, मित्र
सिद्धि = सफलता
मीत = मित्र, दोस्त

स्वाध्याय

आकलन

१. (अ) कृति पूर्ण कीजिए :

बल इसके लिए होता है

(१) ....

(२) ....

(आ) जिसे मंजिल का पता रहता है वह :

(१) ....

(२) ....

शब्द संपदा

२. निम्नलिखित शब्दों से उपसर्गयुक्त शब्द तैयार कर उनका अर्थपूर्ण वाक्य में प्रयोग कीजिए :

(१) नीति – ....

(२) बल – ....

अभिव्यक्ति

३. (अ) 'धरती से जुड़ा रहकर ही मनुष्य अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है', इस विषय पर अपना मत प्रकट कीजिए ।

(आ) 'समाज का नवनिर्माण और विकास नर-नारी के सहयोग से ही संभव है', इसपर अपने विचार लिखिए ।

रसास्वादन

४. निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर चतुष्पादियों का रसास्वादन कीजिए :

(१) रचनाकार का नाम – ....

(२) पसंद की पंक्तियाँ – ....

(३) पसंद आने के कारण – ....

....

(४) कविता का केंद्रीय भाव – ....

....

साहित्य संबंधी सामान्य ज्ञान

५. (अ) चतुष्पदी के लक्षण लिखिए ।

....

....

(आ) त्रिलोचन जी के दो काव्य संग्रहों के नाम –

....

६. **निम्नलिखित वाक्य शुद्‌ध करके फिर से लिखिए :**

(१) अतिथि आए है, घर में सामान नही है ।

....

(२) परंतु अग्यान भी अपराध है ।

....

(३) उसके सत्य का पराजय हो जाता है ।

....

(४) प्रेरणा और ताकद बनकर परस्पर विकास मे सहभागी बनें ।

....

(५) दिलीप अपने माँ–बाप की इकलौती संतान थी ।

....

(६) आप इस शेष लिफाफे को खोलकर पढ़ लीजिए ।

....

(७) उसमें फुल बिछा दें ।

....

(८) कहाँ खो गई है आप ।

....

(९) एक मैं सफल सूत्र संचालक के रूप में प्रसिद्‌ध हो गया ।

....

(१०) चलते–चलते हमारे बीच का अंतर कम हो गया था ।

....